Hindi Murli Quiz 25-01-2015

ये क्विज आज की मुरली पर आधारित है| मुरली सुनने के लिए यहाँ क्लिक करें| पुरानी क्विज के लिए यहाँ क्लिक करें |

Q.1) **बाप का रिगार्ड अर्थात् सदा जो है जैसा है वैसे स्वरूप से, यथार्थ पहचान से बाप के साथ सर्व सम्बन्धों की मर्यादाओं को निभाना । बाप के सम्बन्ध का रिगार्ड है फालो फादर करना ।**

A. True
B. False

Q.2) **बाप का रिगार्ड अर्थात बाप के साथ सर्व सम्बन्धों की मर्यादाओं को निभाना । इसपर निम्नलिखित मैचिंग एक्सरसाइज है । वाक्यों को उनके अर्थ अनुसार ही आपस में मिलाएं ------**

	Choice		Match
A	शिक्षक के सम्बन्ध का रिगार्ड है,	1	बाप ने कहा और बच्चे ने किया ।
B	सतगुरू के सम्बन्ध मे रिगार्ड रखना,	2	सदा पढ़ाई मे रेगुलर और पंक्चुअल रहते सर्व सबजेक्ट मे फुल अटेंशन देना ।
C	साजन के सम्बन्ध का रिगार्ड,	3	हर संकल्प और सेकेण्ड में उसी की लगन में आशिक रह वफादारी को निभाना ।
D	सखा वा बन्धु के सम्बन्ध का रिगार्ड अर्थात,	4	सदा सर्व बातों में साथीपन का अनुभव करना ।
E	सर्व सम्बन्धो का नाता निभाना ही बाप का रिगार्ड रखना है अर्थात,	5	देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध भूल निराकारी स्थिति मे स्थित रहना ।

Q.3) **नॉलेज का रिगार्ड अर्थात् आदि से अभी तक जो भी महावाक्य उच्चारण हुए उन हर महावाक्य में अटल निक्षय हो -- कैसे होगा, कब होगा, होना तो चाहिए, है तो सत्य.... इस प्रकार के प्रश्न उठाना भी सूक्ष्म संकल्प के रूप मे संशय उठाना है । यह भी नॉलेज का डिसरिगार्ड है ।**

A. False
B. True

Q.4) **ऐसे चारों ही बातों में रिगार्ड अच्छा रखने वाले ---------- की आत्माओं द्वारा रिगार्ड लेने के पात्र बनते हैं अर्थात् अब ---------- -कल्याणकारी रूप में और भविष्य ----------महाराजन के रूप में और मध्य में श्रेष्ठ पूज्य के रूप मे प्रसिद्ध होते हैं । तो --------- महाराजन बनने के लिए रिकार्ड भी ऐसा बनाओ ।**
[एक सही उत्तर से सभी रिक्त स्थान भरें]

A. विश्व
B. संगमयुग
C. सतयुग
D. कलयुग

Q.5) **बाप के कदम के ऊपर कदम रख चलना । मनमत वा परमत, बुद्धि द्वारा ऐसे समाप्त हो जाए जैसे कोई चीज होती ही नही । मनमत वा परमत को सकल्प से टच करना भी स्वप्नमात्र भी न हो अर्थात् अविद्या हो । सिर्फ एक ही श्रीमत बुद्धि मे हो - सुनो तो भी बाप से, बोलो तो भी बाप का, देखो तो भी बाप को, चलो तो भी बाप के साथ, सोचो तो भी बाप की बाते सोचो, करो तो भी बाप के सुनाये हुए श्रेष्ठ कर्म करो । इसको कहा जाता है बाप के रिगार्ड का रिकार्ड ।**

A. False
B. True

Q.6) **वाक्यों को उनके अर्थ अनुसार ही मिलाएं ----**

	Choice		Match
A	रिगार्ड देना भी,	1	अन्य आत्माओं द्वारा रिगार्ड लेने के पात्र बनते हैं ।
B	जो रिगार्ड देते हैं वे आत्मायें वर्तमान समय और जन्म-जन्मान्तर भी,	2	तो वुद्धि रूपी पांव सदा तख्तनशीन हो ।
C	बापदादा ने भी आदि काल से पहले बच्चों को रिगार्ड दिया,	3	ऐसे ही फालो फादर ।
D	चारो प्रकार के रिगार्ड मे चेक करो कि,	4	चारों में सम्पन्न हो वा किसी में कम वा ज्यादा ।
E	परमात्म बाप के बच्चे हो,	5	ब्राहमण जीवन के चढ़ती कला का साधन है ।

Q.7) **वाक्यों को उनके अर्थ अनुसार ही मिलाएं ----**

	Choice		Match
A	रिगार्ड रखना अर्थात् रिगार्ड लेना है,	1	वे सर्व का प्यार प्राप्त करते और भाग्य उनके पीछे दौड़ता है ।
B	स्नेह और शक्ति का बैलेन्स, स्वयं और सेवा का बैलेन्स,	2	देना, लेना हो जाता है ।
C	वह हंस क्षीर और नीर को अलग- अलग करता है लेकिन होली हंस,	3	अगर मेहनत करनी पडती है तो कम प्यार है ।
D	बाप से प्यार की निशानी स्वत : याद,	4	यह विशेषता अटेंशन द्वारा लानी है ।
E	जो नाम--मान [कच्चा फल] का त्याग करते,	5	व्यर्थ [अवगुण] और समर्थ [गुण] अलग कर व्यर्थ को छोड़ देते, समर्थ को अपनाते ।

Q.8) **बापदादा ने आज मुरली में कितने प्रकार के रिगार्ड बताये हैं, स्पष्ट करें----------**

A. स्वयं का रिगार्ड,
B. सम्बन्ध वा सम्पर्क में आने वाली आत्माओं के प्रति आत्मा का रिगार्ड ।
C. बाप द्वारा मिली हुई नॉलेज का रिगार्ड,
D. बाप का रिगार्ड,

Q.9) **चौथे रेगार्ड के रूप में बापदादा ने 'आत्माओं द्वारा सम्बन्ध वा सम्पर्क में आने वाली सभी आत्माओं का रिगार्ड रखना' – यह बहुत सहज तरीके से समझाया है । उन सभी पॉइंट्स का चयन करें ----**

A. सदा अपने स्मृति की समर्थी द्वारा अन्य आत्माओं का सहयोगी बनना,
B. दिलशिकस्त को शक्तिवान बनाना, संग के रंग मे नही आना, सदा उमंग-उल्लास मे लाना,
C. हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ भावना अर्थात् आगे बढ़ाने की भावना हो, विश्व कल्याण की कामना हो,
D. सदा आत्मा के गुणों वा विशेषताओं को देखना, अवगुण को देखते हुए भी न देखना,
E. अपनी शुभ वृत्ति से वा शुभचिन्तक स्थिति से अन्य के अवगुण को भी समाना और फिर परिवर्तन करना,
F. सदा 'पहले आप' का मंत्र संकल्प और कर्म में लाना,

Q.10) **स्वयं का रिगार्ड - इसमे भी बाप द्वारा इस अलौकिक श्रेष्ठ जीवन वा ब्राह्मण जीवन के जो भी टाइटिल हैं, स्वमान हैं वा जो स्वरूप वा स्थिति का गायन है - जैसे श्रेष्ठ आत्मा, डायरेक्ट बाप की सन्तान, स्वदर्शन चक्रधारी, मास्टर सर्वशक्तिमान, ज्ञान स्वरूप, फरिश्तेपन की स्थिति- ऐसे अपने को अनुभव करना, ऐसी स्थिति मे स्थित रहना वा वैसे समझकर चलना इसको कहा जाता है स्वयं का रिगार्ड । मै तो कमजोर हूँ, मेरा ड़ामा में पार्ट ही पीछे का है, जितना है उतना ही अच्छा है, अगर ऐसे स्वयं से दिलशिकस्त होते तो यह भी स्वयं का डिसरिगार्ड है । यह भी चेक करो ।**

A. True
B. False